पाठ : ५

# जो बीत गई सो बात गई

**STUDY NOTES**

परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है। आसमान की खगोलीय गतिविधियों तथा प्रकृति में भी किसी-न-किसी रूप में परिवर्तन होता ही रहता है। यह परिवर्तन कभी तो हमारे अनुकूल होता है और कभी प्रतिकूल। हम इन दोनों परिस्थितियों में क्रमशः संतुष्ट व निराश होते रहते हैं जबकि हमें इन सब से मुक्त होना चाहिए। कवि ने आसमान एवं प्रकृति का उदाहरण देते हुए कहा है कि आसमान से तारे टूटते रहते हैं। उनका अस्तित्व नष्ट होता रहता है परंतु आकाश कभी भी दुख व्यक्त नहीं करता जबकि वह जानता है कि ये टूटे तारे पुनः आसमान में वापस नहीं आ सकेंगे। इस तरह कवि कहता है कि जो बात बीत जाती है उसके विषय में सोचने से कोई लाभ नहीं होता। इसी तरह उपवन में फूल सूख जाते हैं। कलियाँ मुरझा जाती हैं, लताएँ भी सूख जाती हैं। उनके पुनः पुष्पित-पल्लवित होने की संभावना नहीं होती परंतु वह उपवन शांत भाव से सब कुछ सहन कर लेता है।